लेख

1

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 का ज्ञानमीमांसीय विश्लेषण

अनिल कुमार*
सुमित गंगवार**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुभाग 1.1 में निर्धारित लक्ष्य "प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सार्वभौमिक प्रावधान को जितना जल्दी हो सके उतनी जल्दी हासिल किया जाना चाहिए" की प्राप्ति के लिए बुनियादी स्तर अर्थात 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा का विकास किया गया है। प्रस्तुत शोध लेख में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इसी सार्वभौमिक प्रावधान को दृष्टिगत रखते हुए, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 का ज्ञानमीमांसीय विश्लेषण किया गया है। इस पाठ्यचर्या को तैयार करने में प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में हुए व्यापक विश्वव्यापी शोध, भारत की समृद्ध परंपराओं और प्रमुख नई पहलों यथा— निपुण भारत, विद्या प्रवेश तथा बालवाटिका आदि को स्थान दिया गया है। इस रूपरेखा में बुनियादी स्तर के लिए निर्धारित विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्र के सिद्धांत निर्धारित को सीखने तथा ज्ञान के आकलन के लिए विभिन्न विधियों की चर्चा की गई है। इस शोध लेख के अध्ययन उपरांत विद्यालयी स्तर विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर अध्यापन करने वाले अध्यापकों को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 के शिक्षणशास्त्र (ज्ञानमीमांसा) की जानकारी प्राप्त हो सकेगी। जिससे वे अपनी कक्षाओं की अधिगम पारिस्थितिकी को पुनर्निर्मित करने में सक्षम हो सकेंगे, जिसके फलस्वरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 की एक अभिधारणा "भारत के सभी बच्चों के लिए बाल्यावस्था और सीखने का पारिस्थितिकी तंत्र दुनिया में सबसे आगे हो" का निर्माण करके राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम हो सकेंगे।

आधुनिक भारत में प्रारंभिक बाल्यावस्था-शिक्षा की शुरुआत 'गिजुभाई बधेका' और 'ताराबाई मोदक' द्वारा मानी जाती है। जिन्होंने छोटे बच्चों की शिक्षा और देखभाल के लिए बाल केंद्रित दृष्टिकोण की संस्तुति की। गिजुभाई बधेका द्वारा पहला स्वदेशी 'पूर्व-प्राथमिक विद्यालय 1916' में स्थापित किया गया। 1925 में ताराबाई मोदक द्वारा 'नूतन बालशिक्षण संघ' की स्थापना की गई। ताराबाई

* पीएच.डी. शोधार्थी, शैक्षिक अध्ययन विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली 110 025
** *सह-आचार्य,* शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश 226 007

मोदक द्वारा कोसबाड में स्थापित विकासवादी केंद्र बाद में देश में सामुदायिक 'प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.)' कार्यक्रमों के विकास के लिए एक प्रेरणादायक व्यवस्था बन गया। पूर्व-बुनियादी और बुनियादी शिक्षा के संदर्भ में महात्मा गांधी के उभरते विचारों द्वारा प्रारंभिक बाल्यावस्था-शिक्षा के व्यवस्थित ढाँचे की नींव को और अधिक मजबूती मिली (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022)।

स्वतंत्र भारत में सन 1953 में प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा समिति ने प्राथमिक विद्यालय के अंदर ही पूर्व-प्राथमिक विद्यालय स्थापित करने की आवश्यकता पर बल दिया। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (1964–66) ने देश में स्कूल पूर्व केंद्रों की स्थापना की सिफारिश की। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 ने भी प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा को मानव संसाधन विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना। वर्ष 2006 में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के दायरे में आया। महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की नीति 2013 तैयार की। इसमें छह वर्ष से कम आयु के सभी बच्चों के इष्टतम विकास और सक्रीयता सीखने की क्षमता के लिए समावेशी, न्यायसंगत और प्रासंगिक अवसरों को बढ़ावा देने की बात कही गई है। वर्ष 2019 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा तीन साल की विद्यालयी पूर्व-शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या और दिशानिर्देश विकसित किए गए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि वर्ष 2025 तक 3–8 वर्ष की आयुवर्ग के प्रत्येक बच्चे तक नि:शुल्क, सुरक्षित, उच्च गुणवत्तापूर्ण, विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त, प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा की पहुँच सुनिश्चित हो (राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022)।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की चुनौतियों को दूर करने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के माध्यम से बच्चों के विकास पर बल दिया है। यह नीति सुझाव देती है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा का विस्तार एवं विकास इस प्रकार किया जाना चाहिए, जिसकी पहुँच प्रत्येक बच्चे तक सहजता से संभव हो सके तथा कोई भी बच्चा इससे वंचित न रहे। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित सुझावों को क्रियान्वित करने के लिए विकसित किया गया है। पाठ्यचर्या का तात्पर्य किसी भी संस्थागत व्यवस्था में शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों के प्रति विद्यार्थियों के संगठित अनुभवों की समग्रता से है। बुनियादी स्तर का तात्पर्य 3–8 वर्ष की आयुवर्ग के बच्चों के लिए, पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा परिकल्पित विद्यालयी शिक्षा के पुनर्गठित 5+4+4+3 स्वरूप का पहला चरण है।

इस पाठ्यचर्या में बुनियादी स्तर की शिक्षा के लक्ष्य, उद्देश्य, दक्षता एवं प्रतिफलों की विस्तृत चर्चा के साथ-साथ भाषा की महत्ता को ध्यान में रखते हुए बच्चों को उनकी मातृभाषा में ही सिखाने पर बल दिया गया है, जिससे बच्चों को भाषा का शुरुआती ज्ञान हासिल करने में किसी प्रकार की समस्या का

सामना न करना पड़े। इस पाठ्यचर्या के माध्यम से अध्यापकों को शिक्षण के लिए योजना बनाने, बच्चों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने, शिक्षण युक्तियों, शिक्षण विधियों तथा अधिगम वातावरण की निर्मिति इत्यादि के लिए मार्गदर्शित किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें आकलन को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का ही भाग स्वीकार करते हुए इसके लिए नूतन उपकरणों एवं सिद्धांतों से संबंधित सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं।

शोध लेख का उद्देश्य एवं अध्ययन प्रक्रिया

इस शोध लेख का उद्देश्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 का ज्ञानमीमांसीय विश्लेषण करना है। ज्ञानमीमांसा का सीधा संबंध ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की प्रकृति, ज्ञान प्राप्ति के साधनों तथा ज्ञान के औचित्य साधन से होता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 के दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण करके उन बिंदुओं को अन्वेषित करके व्याख्यायित करना है, जोकि प्रारंभिक बाल्यावस्था में देखभाल और शिक्षा की ज्ञानमीमांसा से जुड़े हैं।

अध्ययन के निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध लेख में सुनिश्चित किए गए उद्देश्य के अनुसार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 के दस्तावेज का विषयवस्तु विश्लेषण करने के उपरांत निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए—

ज्ञान का स्वरूप एवं इसकी प्रकृति

बच्चों को उनके जीवन के प्रारंभिक काल से ही यह एहसास दिलाना बेहद जरूरी है कि जीवन में खुशी कितनी महत्वपूर्ण है और इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है। इसके लिए एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था की आवश्यकता है, जिसमें पंचकोशों को ध्यान में रखा जाए (सत्पथी, 2018)। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर (2022) में बच्चों के ज्ञान प्राप्ति की प्रक्रिया में पंचकोशों को महत्वपूर्ण माना गया है। पंचकोश में से अन्नमय एवं प्राणमय कोश से बच्चों का शारीरिक विकास जुड़ा हुआ है। मनोमय कोश में बच्चों की भावनाओं एवं अध्यात्म से जुड़ें प्रश्नों को चिह्नित कर, उत्तर ढूँढ़ा जा सकता है। बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को विज्ञानमय कोश से जोड़कर देखने एवं सीखने में सहायता प्राप्त होगी। आनंदमय कोश को बच्चों के उत्साह, आनंद एवं हर्ष की अनुभूति को जोड़कर देखा गया है। पंचकोशों को शिक्षा में अपनाने से अध्यापक अपनी शैक्षिक प्रणाली और बच्चों के विकास का भारतीयकरण करने की स्थिति में होंगे। इसके माध्यम से अध्यापक किसी भी विद्यार्थी की चेतना के स्तर को निर्धारित कर सकते हैं और विद्यार्थी को उसके स्व के उच्चतम स्तर तक पहुँचने में उसकी सहायता करके उसे अपनी पहचान निर्मित करने में सक्षम बना सकेंगे।

ज्ञान प्राप्ति की विधियों/साधनों का पुनर्स्वरूपण

ज्ञान को उसके सही स्वरूप में विद्यार्थियों तक पहुँचाने के लिए अध्यापकों को विभिन्न शिक्षण विधियों एवं युक्तियों का सहारा लेना पड़ता है। ज्ञान की वैविध्यता एवं विद्यार्थियों में विद्यमान विभिन्नताएँ को दृष्टिगत रखते हुए अध्यापक को विभिन्न शिक्षण विधियों एवं युक्तियों में दक्षता प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। प्रभावी शिक्षण विधियों का उपयोग करके अध्यापक एक ही प्रकार के ज्ञान को अलग-अलग

तरीकों से विद्यार्थियों को समझा सकते हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 में स्पष्ट किया गया है कि अध्यापक बच्चों को बातचीत के माध्यम से भी ज्ञान प्राप्ति के अवसर प्रदान कर सकते हैं। जब अध्यापक एवं विद्यार्थी एक साथ बैठते हैं तो उस वक्त वे बच्चों को किसी भी विषय पर अपने विचार व्यक्त करने के लिए अवसर प्रदान कर सकते हैं, जिसके फलस्वरूप बच्चे अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के साथ-साथ सामाजिक गुण भी सीखते हैं। इस प्रक्रिया में अध्यापक बच्चों को किसी चित्र को दिखाकर उसका वर्णन करने एवं कोई भी विषय देकर उस पर बोलने को कह सकते हैं, ऐसा करने से बच्चों में भाषा का विकास भी संभव होता है। नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए अध्यापक कहानियों का भी सहारा ले सकते हैं। कहानी के माध्यम से बच्चों में नई शब्दावली एवं भाषा का विकास करने में आसानी होती है। अध्यापकों को बच्चों को कहानी सुनाने के साथ-साथ उनसे कहानी सुननी भी चाहिए, जिससे बच्चों में रचनात्मकता तथा कल्पनाशीलता से जुड़े पहलुओं का विकास सुनिश्चित किया जा सकता है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 में खिलौना आधारित शिक्षा पर जोर देते हुए, स्थानीय खिलौनों को प्रयोग में लाने की बात कही गई है। खिलौना आधारित शिक्षा द्वारा न केवल बच्चों को नए ज्ञान से अवगत कराया जा सकता है, बल्कि उनके गत्यात्मक कौशलों को भी को बढ़ावा दिया जा सकता है। खिलौनों के उपयोग से बच्चे तनाव मुक्त रहते हैं एवं उनका सामाजिक विकास भी होता है (आचार्य और कपूर, 2023)।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 में यह बताया गया है कि अध्यापक गीत एवं तुकबंदियों के माध्यम से बच्चों को विभिन्न भाषाओं से परिचित करवा सकते हैं। गीत और संगीत के प्रयोग के दौरान बच्चों के मन-मस्तिष्क में सरस भाव पैदा होते हैं। अध्यापक कला एवं शिल्प के माध्यम से बच्चों में कला को अभिव्यक्त करने की क्षमता, अवलोकन करना, कलाकृति बनाने से गत्यात्मक कौशलों आदि के विकास को बढ़ावा दे सकते हैं। घर के अंदर खेले जाने वाले खेलों (जिगसॉ पहेलियाँ, पजल गेम्स, शतरंज, लूडो आदि) के द्वारा बच्चों को सोचने, बुद्धि के प्रयोग एवं तर्क करने की क्षमता को विकसित करता है। बाहरी खेलों से बच्चों के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास में भी वृद्धि देखी जा सकती है।

विभिन्न आकलन विधियों/प्रविधियों/ युक्तियों का पुनर्परिभाषीकरण

बुनियादी स्तर पर ज्ञान के औचित्य साधन हेतु प्रयुक्त आकलन की प्रक्रिया सहज होनी चाहिए, ताकि बच्चों पर किसी भी प्रकार का दबाव न पड़े। अध्यापकों को आकलन की प्रक्रिया इस प्रकार संचालित करनी चाहिए जिसमें बच्चों के मन में किसी प्रकार का भय न उत्पन्न हो तथा वे आकलन की प्रक्रिया को अन्य प्रक्रियाओं की तरह सहजता से ले सकें। ज्ञान के आकलन की प्रक्रिया में योजना बनाने से लेकर प्रमाण एकत्रित करने के साथ-साथ उस पर मनन करना भी सम्मिलित होता है। मनन की सहायता से अध्यापक अपनी योजना में सुधार करने के साथ-साथ स्वयं अपने एवं बच्चों की सीखने में

सहायता कर सकते हैं (रिफ्लेक्टिव टीचिंग, 2021)। अध्यापकों द्वारा ज्ञान के आकलन हेतु अवलोकन, उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड, संचयी रिकॉर्ड, चेकलिस्ट, विद्यार्थियों के काम का रिकॉर्ड, पोर्टफोलियो, रूब्रिक जैसी नवीनतम तकनीकियों को उपयोग में लाया जा सकता है। आकलन की सहायता से अध्यापक ऐसे विद्यार्थियों की पहचान कर सकते हैं जिनको अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है। यदि इन विद्यार्थियों की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं की जाती है तो उनके स्कूल छोड़ने की संभावना भी बढ़ जाती है। इसलिए इन बच्चों की पहचान करके इनको शैक्षिक सहायता प्रदान की जानी चाहिए (कोरिकाना, 2020)। आकलन का रिकॉर्ड रखने के लिए अध्यापक कथ्यात्मक (नैरेटिव) सारांश भी दर्ज कर सकते हैं, जिसमें अध्यापक बच्चों से संबंधित उनकी काबिलियत, बाधाएँ, अधिगम स्तर, विकासात्मक चक्र, रुचि क्षेत्र तथा अधिगम रिक्ति इत्यादि को लिख सकते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 में 'हॉलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड' का उल्लेख किया गया है जिसमें अध्यापकों को अपने विद्यार्थियों से संबंधित सभी आयामों का विश्लेषण कर जानकारी दर्ज करनी होती है। इस कार्ड में अध्यापकों के आकलन के साथ-साथ माता-पिता द्वारा बताई गई विशेष बातें एवं स्वयं बच्चों के द्वारा किए गए आकलन को भी शामिल किया जा सकता है। 'हॉलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड' में बच्चों के आकलन को ग्रेड देने के लिए चार स्तर (आरंभिक, प्रगतिशील, प्रवीण और उन्नत) निर्धारित किए गए हैं। 'हॉलिस्टिक प्रोग्रेस कार्ड' एक बहुआयामी दस्तावेज है जो विद्यार्थियों के ज्ञान के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक पक्षों का विवरण देता है। इसके माध्यम से विद्यार्थियों को कक्षा एवं कक्षा के बाहर सीखने में सहायता प्रदान की जा सकती है (परवीन, 2020)।

ज्ञान से जुड़े अन्य मुद्दे तथा सरोकार

किसी भी तरह के ज्ञान को अर्जित करने के लिए भाषा की समझ होना अत्यंत आवश्यक है। भाषा का ज्ञान न होने की स्थिति में अध्यापक एवं विद्यार्थी एक दूसरे की बात समझने में असमर्थ होते हैं। भाषा की महत्ता को दृष्टिगत रखते हुए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—बुनियादी स्तर 2022 में बच्चों में भाषा के विकास एवं उनसे जुड़े ज्ञान को ग्रहण करने के लिए, उनकी घरेलू भाषा को अपनाने पर जोर दिया गया है। इस दस्तावेज में यह स्पष्ट किया गया है कि बच्चों को भाषा के लिखित रूप को सिखाने से पूर्व अध्यापक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे मौखिक भाषा से परिचित हों। भाषा से जुड़े विभिन्न कौशलों, जैसे—लिखना, पढ़ना तथा बोलना इत्यादि को सिखाने के लिए अध्यापक विभिन्न युक्तियों एवं शिक्षण विधियों का उपयोग कर सकता है। 3–8 वर्ष की आयु के बच्चे को खेल के माध्यम से भाषा सिखाई जा सकती है। अध्यापकों को शुरुआती दौर में सुनने एवं बोलने वाले खेलों की सहायता लेकर बच्चों को शब्दों का उच्चारण एवं बोलना सिखाना चाहिए। भाषा को सिखाने के लिए अध्यापक बच्चों की भाषा में ही सरल कहानियों, गीत, कविता, खेल, नाटक इत्यादि का सहारा ले सकते हैं। अध्यापक

अपनी युक्तियों में बच्चों के द्वारा उनके अनुभवों का वर्णन, उनकी पसंदीदा वस्तु या व्यक्ति या स्थान का वर्णन, सरल वाक्यों में वार्तालाप इत्यादि सम्मिलित करके उनको भाषा सीखने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। अध्यापक द्वारा फॉनिक्स, डिकोडिंग, स्व-वर्तनी, उच्चारण खेल, शब्द पहचानों खेल, प्रिंट समृद्ध वातावरण, जोर से पढ़ना, चित्रों का वर्णन, कक्षाओं में अधिगम कोने इत्यादि युक्तियों का उपयोग बच्चों को भाषा से संबंधित ज्ञान सीखने में कारगर साबित हो सकते हैं (डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, गवर्नमेंट ऑफ इंडिया, 2021)।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध लेख के परिणाम शिक्षा प्रणाली से जुड़े विभिन्न हितधारकों, जैसे— अध्यापक, प्राध्यापक, प्रशिक्षक, विद्यालय नेतृत्वकर्ता, शिक्षक-प्रशिक्षक तथा पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तक विकास समूह के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक की भूमिका एक सुसाध्यक की मानी जाती है। जिसका कार्य बच्चों के अधिगम हेतु एक प्रभावी अधिगम पारिस्थितिकी का निर्माण करना होता है और अधिगम पारिस्थितकी का सीधा संबंध सीखने की संपूर्ण प्रक्रिया से होता है। इस शोध लेख के अध्ययन उपरांत बुनियादी स्तर के अध्यापक इस स्तर के विद्यार्थियों की सीखने की संपूर्ण प्रक्रिया को समझ सकेंगे और इसके अनुसार अधिगम वातावरण के निर्माण में सक्षम हो सकेंगे।

सीखने की सक्रिय प्रक्रिया का मूल संबंध शिक्षण विधियों अर्थात ज्ञान प्राप्ति के साधनों से है। इस शोध लेख के अध्ययन उपरांत अध्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022 द्वारा बुनियादी स्तर के लिए अनुशंसित विभिन्न शिक्षण विधियों में से बच्चों के लिए उनकी अभिरुचि, अभिवृत्ति और अभिक्षमता के अनुरूप खेलों के जरिए सीखने की विशिष्ट विधियों के चयन में सक्षम हो सकेंगे। इस प्रकार की शिक्षण विधियाँ अध्यापकों तथा बच्चों के बीच सकारात्मक संबंध के निर्माण तथा सकारात्मक कक्षा-कक्ष वातावरण के निर्माण में अध्यापकों की सहायता करती हैं।

विद्यार्थियों की सीखने का संबंध अधिगम प्रतिफलों की प्राप्ति से होता है और अधिगम प्रतिफलों का आकलन ही इस बात की पुष्टि करता है कि किस सीमा तक इन प्रतिफलों की प्राप्ति हो पाई है। अतः इस शोध लेख के अध्ययन उपरांत अध्यापक इस रूपरेखा में बुनियादी स्तर के लिए अनुशंसित आकलन के तरीकों और उपकरणों का प्रभावी उपयोग करने में सक्षम हो सकेंगे।

इसके अतिरिक्त इस लेख के द्वारा शिक्षा से जुड़े अन्य शिक्षा पेशेवर जैसे परियोजना अधिकारी, संकुल तथा खंड संसाधन व्यक्ति, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, शिक्षक-प्रशिक्षक भी लाभान्वित हो सकेंगे जिसका उपयोग वे अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में करने में स्वतंत्र हो सकेंगे।

उपसंहार

पाठ्यचर्या की यह रूपरेखा भारत में 3–8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए यह अब तक की पहली एकीकृत पाठ्यचर्या रूपरेखा है, जोकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए निर्मित

5+3+3+4 'पाठ्यचर्या और शिक्षणशास्त्रीय' ढाँचे का प्रतिफल है। जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में हुए विभिन्न शोधों के परिणामों और विभिन्न भारतीय परंपराओं से प्राप्त विवेक तथा ज्ञान को भी समाहित किया गया है। बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए विकसित पाठ्यचर्या की ज्ञानमीमांसीय विश्लेषण पर आधारित इस शोध लेख में पाठ्यचर्या में निहित ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की प्रकृति, ज्ञान प्राप्ति के साधनों तथा प्राप्त ज्ञान के औचित्य साधन के लिए विभिन्न आकलन विधियों/प्रविधियों/युक्तियों पर व्यापक चर्चा की गई है। जिसमें बुनियादी स्तर की शिक्षा के लक्ष्य और उद्देश्य, पाठ्यक्रम, सीखने-सिखाने की विषयवस्तु, शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाएँ, अधिगम पारिस्थितिकी को विस्तारपूर्वक बताया गया है। निश्चित तौर पर इस शोध लेख के अध्ययन द्वारा शिक्षा व्यवस्था से जुड़े विभिन्न हितधारक लाभान्वित होंगे। जिससे हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्य "प्रत्येक बच्चे को निशुल्क, सुरक्षित, उच्चगुणवत्तापूर्ण तथा विकासात्मक दृष्टि से उपयुक्त प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा उपलब्ध हो" को प्राप्त करने में सक्षम हो सकेंगे।

संदर्भ

आचार्य, एस. और ई. कपूर. 2023. ए शिफ्ट इन पैराडाइम इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन : इज प्ले-बेस्ड लर्निंग द आंसर. *रिसर्च इन टीचर एजुकेशन.* 13(2), पृ.सं. 25–29.

कोरिकाना, ए. 2020. स्लो लर्नर्स ए यूनिवर्सल प्रोब्लम एंड प्रोवाइडिंग एजुकेशनल ऑपरचुनिटीज टू देम टू बी ए सक्सेसफुल लर्नर. *पीपल : इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस.* 6(1), पृ.सं. 29–42.

चंद्रा, सी.आर. गुलाटी और ए. शर्मा. 2017. क्वालिटी अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन इन इंडिया : इनीशिएटिव, प्रैक्टिस, चैलेंजिस एंड एनेब्लर्स. *एशिया-पैसिफिक जर्नल ऑफ रिसर्च इन अर्ली चाइल्डहुड एजुकेशन.* 11(1), पृ.सं. 41–67.

परवीन, एस. 2020. 360 डिग्री हॉलिस्टिक असेसमेंट : ए न्यू एप्रोच टू शेप द पर्सनालिटी ऑफ ए लर्नर एज विजुआलाइज्ड बाई नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिफ्लेक्टिव रिसर्च इन सोशल साइंस.* 3(2), पृ.सं. 4–8.

मुबाशर, आर., ए. हाशमी और एफ. अल्ताफ. 2020. फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग टीचर्स प्रैक्टिसेज़ इन इम्प्लीमेंटेशन ऑफ अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन इन पब्लिक स्कूल्स. *ग्लोबल सोशल साइंस रीव्यूस.* 5(1), पृ.सं. 623–632.

रा.शै.अ.प्र.प. 2021. *रिफ्लेक्टिव टीचिंग.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

———. 2022. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा— बुनियादी स्तर 2022.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* 12 सितंबर 2023 को NEP_final_HINDI_0.pdf (education.gov.in) से प्राप्त।

———. 2023. *नेशनल इनिशिएटिव फॉर प्रोफिशियेंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टैंडिंग एंड न्यूमेरेसी.* डिपार्टमेंट ऑफ स्कूल एजुकेशन एंड लिटरेसी, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली. 12 सितंबर 2023 को education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nipun_bharat_eng1.pdf से प्राप्त।

सत्पथी, बी. 2018. पंचकोश थ्योरी ऑफ पर्सनालिटी. *द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी.* 6(2), पृ.सं. 33–39.

सिंह, ए.के. 2014. *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ.* मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली.